न सिर्फ तुम बच्चों के, इतने सब जो सेन्टर्स हैं, सबके मात–पिता और बच्चे जानते हैं कि बरोबर इनसे हम भविष्य 21 जन्म का सुख घनेरे लेने के लिए आए हैं और बच्चे ये भी समझते हैं कि दुनिया नहीं जानती है कि मात–पिता से सुख घनेरे कैसे मिलते हैं या मिले थे। अभी तुम बच्चे अच्छी तरह से जान चुके, ये बहुत सहज है; परन्तु जब टाइम आए तब मिले ना। गाते तो आए हैं– मात–पिता, बालक तेरे...सुख घनेरे। तो अभी जब समय आया है तभी बाप भी आते हैं और बाप पहचान देते हैं, बच्चे भी पहचान देते हैं। तो देखो, ...कितने बच्चे हो और तुम अपन को सारी मनुष्य सृष्टि में कितने खुशनसीब समझते हो। तुम जानते हो कि सारी दुनिया उस तरफ में भक्तिमार्ग के ... खाती जाती है। कुछ भी नहीं समझते हैं, कुछ भी नहीं जानते हैं और तुम बच्चे तो देखो, बेहद के बाप को जानने से तुमको कितनी खुशी होती है और बाप को भी खुशी होती है, हूबहू ऐसे ही जैसे बाप को बच्चे मिलते हैं, बच्चे बाप को मिलते हैं। तो दोनों को खुशी होती है। वो भी बाबा–2 करते रहते हैं और वो बच्चे–2 पुकारते रहते हैं। ठीक है ना। यहाँ भी देखो, एक ही मात–पिता वा बापदादा। तो बच्चों को ये पक्का–3 निश्चय है, भले कई–2 बच्चों को माया निश्चय से डगमगाय देती है वा संशयबुद्धि भी कर देती है। तो ये ग्रहचारी भी बाप ने समझाया है कि बच्चे, ये भी कमाई है। सच्ची कमाई में भी ग्रहचारी है। सच्ची कमाई में भी ग्रह अच्छे होते हैं। बृहस्पत की दशा बैठती है तो कुछ भी नहीं हिलते हैं, बस खुश रहते हैं और यात्रा में बिल्कुल मस्त रहते हैं। ...तुम अपने से सब पूछ सकते हो कि हमारे ऊपर कौन–सी दशा है? बृहस्पत की है, शुक्र की है या बुद्ध की है, बुद्धड़ी है जो बुद्धू बन जाते हैं। तो हर एक जो समझते हैं कि हम बाबा को बहुत अच्छी तरह से याद करते हैं। बस, हम खाते हैं, पीते हैं, बस 'बाबा' कहकर हमारे रोमांच खड़े हो जाते हैं। तो जब–2 बाप को याद करते हो, रोमांच खड़े हो जाते हैं और खुशी अंदर में। तो जितना खुशी आन्तरिक खुशी; क्योंकि गोपिकाओं को अतिइन्द्रिय सुख। तो जितना–2 बच्चे याद करते हैं। अभी तो सन्मुख हुए हो। देखो, कितने नज़दीक बैठे हुए हो और बच्चे जानते हैं कि हाँ, ये वही बाबा है जिनसे हम सुख घनेरे लिए थे। बाप कहते हैं ये मेरे वही हैं हमारे बच्चे। देखो, सन्मुख बैठे हो ना मीठे बच्चे। तो सन्मुख की इतनी संगम की ; इसको मिलन का संगम कहा जाता है। तो जितना तुम बच्चों को यहाँ सन्मुख खुशी होती है, इतना थोड़ा दूर रहने से अपने–2 घरों में नहीं रहती है। यहाँ देखो, देखते हो ना हम सन्मुख बैठे हुए हैं, जिससे हमको वर्सा मिलता है और बाप बैठकर समझाते हैं– मीठे–2 लाड़ले बच्चों। अभी कौन कहते हैं? बाबा कहते हैं आत्माओं को। तो उसको सुप्रीम रूह कहा जाता है। बैठ करके अपने बच्चे रूह हैं, उनसे रूहानी रूह–रिहान कर रहे हैं। बहुत मीठी–2 बातें सुना रहे हैं। ऐसे कोई भी जिस्मानी नहीं है। देखो, जिस्मानी शास्त्र,वेद,ग्रंथ, कितना देखो, भले रामायण सुनाते हैं... सुनाते हैं। अभी चलो, कृष्ण को भी वो कंस लिया या कुछ भी हुआ, तो भी देखो दुःख की बातें सुनेंगी। राम की भी दुःख की बातें सुनेंगी। ये जो कथाओं में हैं– अकासुर, बकासुर, फलाने को मारा, सब मारा–मारी की बात। रामायण में भी मारा–मारी की बात। जहाँ भी देखो, दुनिया में मारामारी। शास्त्रों में भी मारा–मारी, दुनिया में भी मारा–मारी, सब मारा–मारी की बात। यहाँ देखो तुम कितनी मीठी बातें सुनती हो! इसको कहा जाता है रूह–रिहान। सुप्रीम बाबा, जो सुप्रीम रूह है, बाबा है, वो आत्माओं से कितनी मीठी–2 बातें करते हैं। कितनी बच्चों को खुशी होती है– ओह ! बाबा हमको...अपना भी परिचय दे दिया, जो कोई भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो बच्चे कि बाप का परिचय किसके पास नहीं है। ...उसका नाम,रूप,देश,काल क्या है, कुछ भी नहीं जानते हैं। बिल्कुल नहीं। तुम(ने) कभी सुना है कि आत्मा...। सिर्फ इसके लिए भले कह देते हैं। कहते आत्मा के लिए भी अंगुष्ठे मिसल; परन्तु फिर भी कहते हैं– चमकता है सितारा भृकुटी के बीच में। चलो, सो भी कैसा सितारा है, क्या है, कुछ भी नहीं जानते हैं। वो थोड़े ही जानते हैं कि हमारा सितारा कितना जन्म लेते हैं, पार्ट बजाते हैं। हमारी जो आत्मा है, उसको

अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। कब से, क्या, कुछ भी नहीं जानते हैं। तुम देखो बच्चे जैसे बाप को कहा जाता है ना नॉलेजफुल, तो तुम्हारे में भी नंबरवार। तुम पढ़ रही हो, तुम भी नंबरवार नॉलेजफुल बन जाएँगे। अभी तुम बच्चों को नॉलेज है ना। तुम नहीं तो क्या जानो शिव क्या है, कभी आया था, शिवजयन्ती कभी मनाई। कुछ तो होना चाहिए ना। शिवजयन्ती के बाद , अच्छा शिवजयन्ती का संवत् तो कुछ बताओ। जैसे क्राइस्ट का संवत् बताते हैं, इस्लाम का संवत् बताते हैं ना। अभी वो तो नहीं कोई आ करके मैसेज देते हैं ना। उनको मैसेन्जर कहा जाता है कि मैसेन्जर आया। क्या आकर किया? ये धर्म की स्थापना की। अभी इसने क्या मैसेज दिया? आ करके धर्म की स्थापना की। किसकी? क्रिश्चियन धर्म की। मैसेज क्या दिया? ... मैसेन्जर भी नहीं है। अंग्रेज़ी में उनको मैसेन्जर कहा जाता है, पैगाम्बर कहा जाता है यानी पैगाम ले आते हैं। कोई भी पैगाम कुछ भी नहीं ले आते हैं। विचार करो। अभी तुम जानते हो कि बाबा पैगाम ले आते हैं, मैसेज ले आते हैं। कौन–सी मैसेज ले आते हैं? बाप कहते हैं– बच्चे, मैं तुमको मैसेज देता हूँ यानी इत्तला देता हूँ कि मुझे याद करो। और कोई है क्या, ऐसे मैसेज देते हैं? ये मैसेज (देते) हैं ना बाबा– हे आत्माओं! हम तुमको मैसेज देते हैं कि मुझे याद करो, घर जाकर पहुँचेंगे। मैं निमंत्रण देता हूँ। निमंत्रण देते हैं ना बच्चे। कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को निमंत्रण देने, घर चलने के लिए। इसको कहा जाता है मैसेज यानी पैगाम। और कोई कहेंगे आ करके घर चलो। है कोई? सुना कभी ? कहाँ भी नहीं सुनेंगे, कोई शास्त्र में नहीं है। अरे, बाबा तुम मीठे बच्चे को आए हैं निमंत्रण देने। मीठे बच्चे, अभी थके हो? अभी चलो, मैं निमंत्रण देने आया हूँ तुम बच्चों को। तुम चलेंगे अपने सुखधाम? शांतिधाम से हो करके सुखधाम चलना होगा तुमको। और कोई मैसेज...। नाम तो बहुत रखते हैं पैगम्बर, मैसेन्जर। क्या पैगाम देते हैं, क्या मैसेज देते हैं? कुछ भी नहीं। तुमको तो देखो, कैसे आ करके बाबा कहते हैं बच्चे, अभी घर चलेंगे? थके या अभी कुछ और भी थकना है या धक्का खाना है, मत्था पीटना है? तो बच्चे कहेंगे– बाबा वाह! क्यों नहीं, हम तो बहुत याद करते थे। पता भी नहीं था हम कब से याद करते थे। तो बाप आ करके बच्चों को कहते हैं कि बच्चे, तुम(ने) द्वापर से थोड़ा–2 याद करना शुरू किया है। अभी तो बहुत याद करते हैं। समझा ना। जहाँ भी देखो, साधु–संत पतित–पावन, पतित–पावन, सीता–राम आओ–3। तो बाप आ करके मैसेज देते हैं, पैगाम देते हैं कि आत्माएँ, अब ड्रामा पूरा होता है। अभी तुम सभी पतित बन गए हो। चलो, अभी चलेंगे पावनपुरी मुक्तिधाम वा पावनपुरी जीवनमुक्तिधाम? अभी कौन कहेंगे नहीं चलेंगे!.. फिर बोलते हैं चलेंगे, तो फिर तुमको ये मूत पीना तो छोड़ना होगा ना। विख लेना तो छोड़ना पड़ेगा ना। अभी तो अमृत पीना पड़ेगा ना। गाया भी जाता है ना अमृत छोड़ विख क्यों खाना चाहिए, जबकि अमृत से तुम हीरे जैसा बनेंगे और विख से कौड़ी जैसा बने हो और बाप कहते हैं मैं तुम्हारे लिए कलश ले आया हूँ। वो कलश के लिए कहते हैं ना माताओं के सिर पर धरते हैं। कोई एक के सिर पर तो कलश नहीं है ना। इनके ऊपर कलश हैं, इनके ऊपर कलश और ये सभी एक/दो के ऊपर ज्ञान का कलश रखती जाती हैं सबके। तो अभी तुम्हारा धंधा क्या हुआ? बस, तुम्हारा यही धंधा हुआ कि जो भी अपनी हमजिन्स हैं, जो भी बच्चे हैं, बच्चियाँ हैं, सब बच्चों को कहो बाबा आए हुए हैं। बोलते हैं घर को चलेंगे? ....नहीं, उनको ये विषय गटर पसन्द आते हैं। नहीं तो तुम्हारा पैगाम/मैसेज ही ये है– चलेंगे? बाबा आया है कहने के लिए, चलेंगे अभी सुखधाम? क्योंकि तुम सुखधाम के वासी थे। अभी दुःखधाम के वासी हो। अभी चलेंगे सुखधाम? तो वो समझाते हैं, सुखधाम चलेंगे वाया शांतिधाम। अच्छा, कैसे चलेंगे? बाबा रस्ता बता देते हैं। बोलते हैं– बच्चे, मुझे याद करो; क्योंकि तुम कहते हो ना– पतित–पावन। ऐसे तो है ना। पतित–पावन के लिए ये कहते हो ना– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। हे पतित को पावन बनाने वाले मात–पिता वा बाबा, हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। तो आकर पूछते हैं ना पावन बनेंगे? सुख घनेरे लेंगे? अभी मैं आया हुआ हूँ। अभी तुम सब अच्छी तरह से जानते हो। तो सभी को निश्चय है ना यहाँ

आए हुए हो। बाबा–मम्मा कहते हो। जिसको बाबा–मम्मा कहा जाता है क्या संशय से कहा जाता है? कभी माँ–बाप को ; बाबा कहते हो तो कोई संशय से कहते हो या सच्चा? तो जब सच्चा कहते हो, पहचाना है और बरोबर जानते हो कि बाबा हमारा आया हुआ है यानी अवतार लिया है और फिर आकर समझाते हैं– मैं एक ही दफा आता हूँ। समझे! यूँ तो तुम सभी बच्चे अवतार लेते हो ना। दूर देश से, निराकार से साकार में आते हो, अवतरते हो। तुम्हारे अवतरण को, वो तो बिल्कुल कॉमन है। सबसे जास्ती किसका अवतरण, जिसको अनकॉमन कहा जाता है? बाप का। देखो, गाया ही जाता है– भगवान अवतार लेते हैं। तो भगवान को अवतार लेना पड़े ना। अवतरते तो तुम भी हो। भगवान कैसे अवतार लेवे, कैसे अवतरे? तो फिर खुद आकर बताते हैं मैं देखो, अभी तीन चित्र तो हैं ना, उनका भी हिसाब चाहिए ना। तो बरोबर ब्रह्मा द्वारा आते हैं। सन्मुख बैठे हो, जानते हो कि हम आत्माएँ यानी इस शरीर की आत्माएँ, जो परमपिता, जिसको हम याद करते थे, जिसको कभी भी अपना शरीर होता ही नहीं है, हमेशा वो अशरीरी रहते हैं, हम उनके सन्मुख बैठे हुए हैं और हम उनके बालक हैं। अभी वर्सा देना पड़े ना बच्ची। आत्मा को अलग शरीर से तो वर्सा नहीं मिल सकता है ना। तो बोलते हैं– तुम भी जीवआत्मा बने हो, हमको भी जीव में प्रवेश करना है। अभी तुमको बैठ करके पढ़ाता हूँ। नहीं तो आत्मा सुनेगी कैसे? अगर आत्मा अलग हो जाए तो कुछ सनेगी? नहीं सुनेगी। तुम आत्मा को कुछ भी कहो, कुछ भी नहीं, चलेगी भी नहीं और आत्मा तो चली जाती है। तो अभी बाप बैठ करके तुम आत्माओं को सुनाते हैं, पढ़ाते हैं और तुम बहुत खुशी में आते हो वो बाबा आया हुआ है। अभी हमको बहुत सहज राजयोग सिखलाते हैं। सो भी ये बहुत...सहज एकदम कि याद और इस चक्कर को याद करना, बस। नहीं तो ये विचार की बात है ना। नहीं तो कैसे 21 जन्म का वर्सा अहिल्याएँ, कुब्जाएँ, गणिकाएँ, बुड्ढ़ियाँ, फलानियाँ। देखो, कैसी बुड्ढी–2 बैठी हो। कहाँ जाती हो? हम जाती हैं भगवान की पाठशाला में; क्योंकि गीता की जो पाठशाला है, वो भगवान की पाठशाला है ना। उसमें है ना– भगवानुवाच। हम भगवान की गीता की पाठशाला में जाते हैं। वहाँ जाते हैं सभी गीता–पाठशाला में ; हम भगवान की गीता–पाठशाला में जाते हैं। वहाँ भगवान पढ़ाते हैं। तो 5000 वर्ष (पहले) भी पढ़ा था, अभी भी भगवान पढ़ाते हैं। ठीक है ना! गीता में ऐसे है ना– भगवानुवाच। अच्छा, 'भगवानुवाच' आगे कब थी? जबकि महाभारत की लड़ाई लगी थी। तो बरोबर महाभारत की लड़ाई वही सामने खड़ी है। अरे, बाबा कोई घोड़े–गाड़ी के ऊपर थोड़े ही बैठेंगे। हम यहाँ घोड़े–गाड़ी ले आएँ ना। इस हॉल में ले आऊँ घोड़ा–गाड़ी, जो तुम बच्चों को पढ़ाऊँ? क्योंकि पाठशाला, सो तो ज़रूर...बड़े घर में होगी ना। अच्छा, गीता–पाठशाला, तो ज़रूर भगवान आएँगे रथ ... कि घोड़े की गाड़ी पर आएँगे? नहीं तो देखो, कितनी चरियाई एकदम शास्त्रों में। अभी तुम जान गए हो एक तरफ में घोड़े–गाड़ी दिखलाते हैं, दूसरी तरफ में बैल भी दिखलाते हैं, तीसरे तरफ में भारी रथ भी दिखलाते हैं। देखो, कितनी बातें सुनाते हैं। सहज राजयोग सिखलाने वाला। अभी किसको कुछ भी पता नहीं, क्यों? हम भगवान तो उनको कहते हैं और वो कहते हैं कि मैं इस रथ द्वारा आता हूँ। बस, ड्रामा में दूसरा कोई रथ है नहीं। फिर ड्रामा में तुम बच्चों बिगर जो भी ब्राह्मण थे, और कोई भी देवता बन नहीं सकते हैं। ये ड्रामा की नूँध है। तो इन बच्चों को, जो आज आई हैं थोड़ी जास्ती बच्चियाँ, इनको बहुत शौक चाहिए कि हम शिवबाबा की(के) साथ में जितनी इस मनुष्य सृष्टि की खिदमत करेंगे, उनको पतित से पावन बनाएँगे, इतना हमको बाबा से या हम खुद ही ऊँच पद पाएँगे। अभी तुम्हारी बुद्धि में होना ही ये चाहिए, दूसरी बातें छूटीं। उसमें भी कुमारियाँ तो बिल्कुल ही छूटी हुई हैं। उनको अभी नौकरी करनी है क्या वास्तव में? नहीं बच्ची। ये क्यों बाबा नौकरी कराते हैं बच्चों की, ये चिह्न देख करके, मेहनत देख करके कि चल सकेंगी या न चल सकेंगी। न चल सके तो भला अपने पढ़ाई में तो हो, जा करके नौकरी तो करे। तो इसलिए बच्चों को कहते हैं– हाँ–2, तुमको पढ़ना है वास्तव में। नहीं तो कन्याओं को नौकरी करनी है क्या ? उनको थोड़े ही वो पढ़ना है। जबकि

बाप आया, भगवान पढ़ाने के लिए आया, तब पतित मनुष्यों से हम क्यों पढ़ें? देखो, बुद्धि से लगता है ना। जबकि भगवान हमको पतित–पावन बनाने और विश्व का मालिक बनाने आया हुआ है, हमको क्या लौढ़ पड़ी है जो हम जा करके पतितों से पढ़ें। उनसे हमको क्या फायदा होगा! दो पैसे की, पाई/पैसे की नौकरी मिलेगी। कौड़ियाँ मिलती हैं ना। अरे भई, तुमको कितना पगार है? 500 कौड़ियाँ; क्योंकि तुम कौड़ी तुल्य हो ना। ये सभी कौड़ी तुल्य हैं ना। भई, हमको 5 करोड़ वो है। बाबा कहते हैं 5 कौड़ियाँ हैं तुम्हारी। क्यों कौड़ियाँ कहते हैं? अरे, ये तो सभी खतम हो जाएँगी ना। कुछ वैल्यू थोड़े ही है उनका। कुछ भी वैल्यू नहीं। जो कुछ भी यहाँ देखते हो, न मनुष्य की वल्यू है, न धन की, न मकान की, न इस दुनिया की। इस दुनिया की कोई भी वैल्यू नहीं है अभी। इसको कहा जाता है वर्थ नॉट ए पेनी। समझा ना। सभी पत्थर बुद्धि हैं ना। ये तो तमोप्रधान है ना। इसको तो कहा जाता है वैश्यालय। भई, उनका क्या मूल्य होता है? कुछ भी नहीं है ना। और फिर बाबा आकर कहते हैं– चलो, बच्चे चलेंगे, शिवालय चलेंगे? सतयुग में चलेंगे? अच्छा, अभी शायद बच्चे आए हैं, उनसे मुलाकात करनी है, टोली खिलानी है। किताब कच्छ में उठाया, गई स्कूल में, यहाँ का ख्याल नहीं। ..हम पढ़ें, फैशनेबुल बनें, क्या करें, फलाना बनें, ये बनें। नहीं। ये बाबा तो.... कहते हैं– अच्छा–2 पढ़ो–2। देखते हैं पढ़ने की दिल है, इस तरफ में रुख नहीं है, तो कहते हैं वो पढ़ो। नहीं तो बोले– बाबा, हम उस पढ़ाई को क्या करेंगे? लात मारूँ हम इस पढ़ाई को? हम ये पढ़ाई पढ़ी हुई हैं, हम क्यों न अंधे की लाठी बनें? तो जब कोई कहेंगे हम क्यों न अंधे की लाठी बनें, तो ज़रूर कुछ ज्ञान सीखी होंगी ना। तो जिसको ज्ञान होगा वो फट कहेंगी– बाबा, लात मारूँ इस नौकरी को। जहाँ भगवान आया, हम जाकर पतितों से पढ़ें! हम क्या पढ़ेंगे उनको; परन्तु वो नशा बच्चों में है नहीं, वो ज्ञान है नहीं। तो बाबा... हाँ–2 पढ़ो–2, मरो। मैं कन्याओं की बात करता हूँ। तो देखना होता है ना। देखते हैं कि इनका इस तरफ में इतना शौक नहीं है, फिर भी ये पढ़ाई को(का) शौक, नौकरी का शौक, तभी बाबा कहते हैं– अच्छा–2, जाओ पढ़ो–2। भले ये भी पढ़ो, ये भी पढ़ो। आखरीन में तो फिर यही सच्ची कमाई काम में आएगी। तो क्यों न छोटेपन से ही जबकि हमको मज़ा आता है इसे पढ़ने में और निश्चय हो गया तो इस पढ़ाई से...। अरे, भगवान पढ़ाते हैं। अभी भगवान से पढूँ या शैतान से पढूँ– ये बुद्धि अभी तलक ऐसी–2 बड़ी–2 कुमारियों की आई नहीं है। बाबा तो नहीं जोर रखेंगे ना। जबकि दिल में उनको नशा होवे, शौक उठे। अभी क्या भगवान पढ़ाते हैं! वो .... आया था ना, पकवान पढ़ाते हैं। वो यहाँ भगवान तो कह नहीं सकते थे, पकवान कहते थे। तो बाबा समझाते हैं– बुद्धि कहती है अभी भगवान पढ़ाते हैं भगवती और भगवान बनाने के लिए। अच्छा, हम शैतान से पढ़ेंगी, क्या बनेंगी? कुछ भी नहीं। शैतान से पढ़ने से शैतान और शैतानी और तो कुछ होता ही नहीं है। बाबा तो आज कन्याओं को देखते हैं सामने। बाबा इनको ललकार करते हैं और नशा नहीं चढ़ता है तो बाबा भी नहीं पूछते हैं। देखता हूँ इनका मुख इस तरफ में है और लात इस तरफ में है। ऐसे हुआ ना। ये उल्टे हैं। बाबा कहते हैं ना अभी सुल्टे बनो। तो देखते हैं कि मुख है उस पढ़ाई के ऊपर, लात है उस पढ़ाई के ऊपर। तो छोड़ देता हूँ। अच्छा, भले पढ़ें। जहाँ चाहिए तहाँ पढ़ें। नहीं तो अभी तो मुख ऊपर में जाता है ना। तो भगवान से पढ़ना चाहिए ना। देखो, मुख ऊपर हुआ ना। यहाँ नीचे में ये शूद्र पढ़ाते हैं, देखो तो। अच्छा, कन्या देखता हूँ तो बाबा को बहुत ये होता है। माताएँ तो बिचारी बंधन में फँसी हुई हैं। बाबा पूछते हैं घड़ी–2 भई, है कोई ? हमको सेन्टरों के लिए बहुत अच्छी–2 बच्ची चाहिए। कोई माता तैयार है जो कहे– हाँ बाबा, हम दो/तीन महीना जा सकती हैं और मैं सर्विसेबुल बहुत अच्छी हूँ, जा करके बहुतों को सुख देंगी, बहुतों का कल्याण करेंगी। बाबा, हमको भेज सकते हो। देखो, बाबा चैलेन्ज देते हैं ना, आते हैं तो। तो कन्या है कोई ऐसी? परन्तु हमको चाहिए जिनका मुख उस तरफ हो, पैर इस तरफ हो। बाकी जिनका मुख इस तरफ में हो, पैर उस तरफ में हो, वो हमको नहीं चाहिए। देखे हो ना, कृष्ण का पैर इस तरफ और मुख स्वर्ग

तरफ। तो स्वर्ग तरफ जिसका मुख होगा वो तो ये पढ़ाई पढ़ेगा ना। जिसका पैर तरफ मुख होगा सो वो जिस्मानी पढ़ाई पढ़ेगी। अच्छा, अभी जास्ती खातिरी नहीं करता हूँ। इनसे मिलता हूँ। आओ, मिलो, देखें। .....नहीं तो वास्तव में किसको 4,5,6 कन्याएँ होती हैं ना, रात को नींद फिट जाती है बिचारों की। कन्या पैदा हुई....उल्टा मंजा बना करके सो जाते हैं। बच्चा होता है तो ..खग्गियाँ मारते हैं। यहाँ बाबा फिर कहते हैं– नहीं, हमको तो कन्या बड़ी पसन्द लगती है एकदम। ये हमारी मददगार है; क्योंकि बंधनमुक्त है और इनका ही नामबाला है 'कन्हैया', कन्याओं के पिछाड़ी। तो कन्या यहाँ खड़ी नहीं होती है अभी तलक। (किसी ने कहा– शिव की महारानी...) सतयुग की महारानी। शिवबाबा की सजनी नहीं हो? तो पहले वो मुख्य बात बताओ ना। ...तुम बच्चों का तो फर्ज ही है। शिवबाबा को याद करने बिगर तो बादशाही नहीं मिल सकती है। घड़ी–2 क्या कहेंगी? शिवबाबा को याद करो या कहेंगे मन्मनाभव। ऐसी भी ज़रूरत नहीं देखने में नहीं आती है। तुम...जाएँगे ना बच्चे, मैं आऊँगा, कैसे सब रहे पड़े हैं। आत्माओं और परमात्मा का मेला सो तो तुम जानते हो बच्चे और ये मेला तो चलता ही रहता है। समझा ना। वो मेला तो एक दिन चलकर बंद हो जाता है। ये मेला तो जब से शुरू हुआ है, बढ़ता जाता है। मेला ये है। कभी बंद नहीं होता है ये मेला। दूसरे मेले लगकर बंद हो जाते हैं ना। ये मेला कब बंद होगा? जब तुम कर्मातीत अवस्था को पाएँगी, तब फिर ये मेला बंद होगा और फिर विनाश शुरू हो जाएगा। तुम अपने बाबा के पिछाड़ी भागती जाएँगी। साथ में ले जाएगा ना। अच्छा! बाबा हमेशा कहते हैं कि दो/तीन रोज़ मुरली नहीं सुनती हैं आते समय। तो बीच में जो दिन नहीं सुनते हैं उनको या तो यहाँ आ करके ; यहाँ तो विश्राम है। यहाँ कोई काम तो नहीं है, कोई भी धंधाधोरी। तो जो मुरलियाँ नहीं सुनी हैं, वो यहाँ बैठ करके, ले करके, मुरली भी सुनो और जितना टेप में रखी हुई हो इसने, वो भी सुनो। यहाँ तो सुनना ही है एक/दो को और दूसरी बात एक/दो को जो किसको समझा नहीं सकते हैं, ये प्रदर्शनी यहाँ रखी हुई है। जो बोल नहीं सकती है, किसको समझाय नहीं सकती है, वो ब्राह्मणी बैठकर, जो–2 ले आती है उनको ये सिखलावे यहाँ। (किसी बहन ने कहा– कल है, 10:30 से 11:30 बजे तक ये क्लास) क्योंकि यहाँ तुम बच्चों को फुर्सत है। दो–तीन दफा धारण कर सकती हो। वहाँ तो सुना और घर में गया, आधा–पौना नशा तो चल जाता है और यहाँ तो तुम बैठे रहते हो, घर में ही हो। इसलिए अभी समझाने की कोशिश करो यहाँ। ब्राह्मणियों को भी यहाँ बैठ करके सर्विस करनी है, उनका मुख खोलना है। मुख्य बात समझानी है– ऐसे समझाओ।

... सिकीलधे सर्विसेबुल बच्चे, ब्रह्मा मुखवंशावली, सर्वोत्तम ब्राह्मण कुलभूषण, मीठे–2 बच्चों प्रति बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।